मासिक पत्रिका दिसम्बर 2023

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

Maharishi Dayanand Saraswati Marg, B-31/C, Kailash Colony, New Delhi-110048

Tel.: 46678389, 9310140742 • E-mail: samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.in

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	अरुण बहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

स्वामी श्रद्धानन्द एक ऐतिहासिक क्रान्तिकारी

-महात्मा चैतन्यस्वामी

साभार: टंकारा समाचार

जिला जालन्धर के पूर्वी कोने पर सतलुज नदी के किनारे तलवन नाम का एक उपनगर है जहाँ लाला नानकचन्द जी के घर 23 फरवरी, 1857 को एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम तो बृहस्पति रखा गया मगर यह बालक मुन्शीराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इन्हीं मुन्शीराम जी ने बाद में स्वामी श्रद्धानन्द नाम से ख्याति अर्जित की। मुन्शीराम की पढ़ाई विधिवत् नहीं हो पाई तथा उन पर कुसंगति का प्रभाव भी धीरे-धीरे पड़ने लगा। रही-सही कमी अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने पूरी कर दी और मुन्शीराम के आचार-विचार पूरी तरह से दूषित होते चले गए। वे स्वयं लिखते हैं- 'मैंने भी उसी विद्यालय में शिक्षा पाई थी जिसने हिन्दू युवकों को अपनी प्राचीन संस्कृति का शत्रु बना दिया था।' कुछ घटनाएं ऐसी भी हुई जिनके कारण उन्हें मत, मज़हब आदि से घृणा हो गई तथा उनके भीतर नास्तिकता के भाव घर कर गए। श्रावण 14, संवत् 1936 के दिन योगीराज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी बरेली पधारे। अपने पिता लाला नानकचन्द जी के कहने पर मुन्शीराम महर्षि जी को सुनने गए और उनसे अनेक शंकाओं का समाधान करके न केवल आस्तिक बनें बल्कि समस्त दुरितों को त्यागकर तपस्वी जीवन जीने लगे। अपनी पुस्तक 'कल्याण-मार्ग का पथिक' के प्रारंभ में ही 'ऋषि-दयानन्द के चरणों में सादर समर्पण' के अन्तर्गत महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। मुन्शीराम जी के जीवन पर उनकी पतिव्रता धर्मपत्नी श्रीमती शिवदेवी जी की भी प्रेरणा एवं सहयोग रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सत्संग से मुन्शीराम जी की जो आत्मा आस्तिकता की ओर उद्बुद्ध हुई थी, शिवदेवी जी के सेवा एवं सहयोग ने उनकी कलुषित आत्मा को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वयं में एक इतिहास थे। उनके जीवन का कार्यक्षेत्र इतना विशाल एवं बहुआयामी था कि उनके सामर्थ्य पर आश्चर्य होता है। वे अत्यधिक आत्मविश्वासी, निर्भीक एवं उत्साही ही नहीं थे बल्कि सच्चे ईश्वर- भक्त, देश-भक्त एवं समाज-सेवक भी थे। उनका दृष्टिकोण मानवतावादी एवं सार्वभौमिक था मगर जहाँ देशहित की बात आती थी तो देश की अस्मिता उनके लिए सर्वोपरि हो जाती थी। वे संकुचित जातिवाद, मत-मज़हबवाद, क्षेत्रवाद आदि भावनाओं से एकदम मुक्त थे। यही कारण है कि वे मानव-मात्र के हितैषी बनकर सर्वपूज्य बनें। वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने दिल्ली की प्रसिद्ध जामा-मस्जिद से वेद मन्त्र के माध्यम से भाई-चारे का सन्देश दिया था। गुरू का बाग आन्दोलन में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद जब समूचा देश सहमा हुआ था तो ये ही थे जिन्होनें कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष-पद स्वीकार करने का साहस किया था। गोरे सैनिकों की संगीनों के समक्ष छाती तानकर खड़ा होने वाला यह साहसी वीर अकल्पनीय है। गोरक्षा, हिन्दी प्रचलन और शुद्धि आन्दोलन की कड़ी बनना उनके जीवन का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग था क्योंकि यही हमारी राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का आधार-भूत सूत्र था। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया वह अपने आप में बहुत ही सार्थक एवं अनुपम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस शिक्षा-पद्धति का प्रचलन अनिवार्य माना था, स्वामी जी ने उसे व्यवहारिक रूप देने के लिए कितना तप और त्याग किया यह इस बात से स्पष्ट होता है कि 3 अक्टूबर, 1897 को जालन्धर में एक बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से गुरुकुल खोलने का निर्णय लिया गया। मुन्शीराम जी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक वे गुरूकुल के लिए तीस हजार रूपए एकत्रित नहीं कर लेते, वे घर में पैर नहीं रखेंगे। इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के मार्ग में अनेक बाधाएं आईं मगर धुन के धनी एवं दृढ़-निश्चयी

मुन्शीराम जी ने तीस हजार के स्थान पर चालीस हजार रूपए एकत्रित कर लिए। अप्रैल 8, सन् 1900 तक चालीस हजार रूपए की राशि एकत्रित हो जाने पर आर्य समाज लाहौर में एक बड़ा उत्सव मनाया गया, मुन्शीराम जी का जलूस निकाला गया, उन्हें अभिनन्दित किया गया तथा उन्हें महात्मा की पद्वी से विभूषित किया गया। महात्मा जी ने अपनी वकालत का परित्याग कर दिया और अपने दोनों पुत्रों को सर्वप्रथम गुरूकुल में पढ़ने के लिए भेजा। उन्होंने न केवल अपना पुस्तकालय बल्कि 'सद्धर्म प्रचारक प्रैस' भी जिसकी कीमत उस समय आठ हजार से कम न थी, गुरूकुल के चरणों में चढ़ा दी। यही नहीं त्यागमूर्ति महात्मा जी ने तीस हजार से अधिक रूपया लगाकर बनाई हुई जालन्धर की कोठी भी गुरूकुल को अर्पित कर दी। नज़ीबाबाद के रईस चौधरी मुन्शी अमनसिंह जी ने अपना कांगड़ी ग्राम और उसके आस-पास की 1200 बीघा भूमि गुरूकुल को दान करके अपना नाम सदा के लिए अमर कर लिया। कठोर परिश्रम से कुछ झोंपड़ियों का निर्माण करके विधिवत् गुरूकुल का शुभारंभ हो गया। महात्मा मुन्शीराम जी को ही गुरूकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत किया गया। गुरूकुल के लिए महात्मा जी ने खून-पसीने से सींचने वाली उक्ति को चरितार्थ किया।

8 दिसम्बर, 1926 को स्वामी जी गुरूकुल गए और अत्यधिक ठण्ड के कारण उन्हें ब्रांको-निमोनिया हो गया। 23 दिसम्बर, 1926 को सेवक धर्मसिंह ने कमोड लाकर दिया और शौचादि से निवृत्त होकर स्वामी जी मसनद के सहारे बैठ गए। तभी धर्मसिंह ने सीढ़ियों से किसी युवक को आते हुए देखा। उसने उसे रोकना चाहा मगर स्वामी जी ने आवाज सुन ली तथा धर्मसिंह से कहा कि कौन है? इसे आने दो। अब्दुल रसीद नामक उस मुस्लिम युवक ने आकर स्वामीजी से कहा कि वह उनसे इस्लाम के मुताल्लिक कुछ बातचीत करना चाहता है। स्वामी जी ने कहा कि भाई, मैं बीमार हूँ तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊँगा तो बातचीत करूंगा। तभी उस युवक ने पानी मांगा और स्वामी जी के आदेश पर धर्मसिंह पानी लेने बाहर गया। इधर उस दुष्ट युवक ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर तीन गोलियाँ चला दीं। धर्मसिंह आगे बढ़ा तो उसकी टांग पर भी एक गोली चला दी। वह हत्यारा वहाँ से भागना ही चाहता था कि स्वामी जी के मन्त्री पण्डित धर्मपाल जी ने आकर उसे दबोच लिया। पुलिस ने आकर उस युवक को पकड़ लिया मगर इधर युगपुरूष स्वामी श्रद्धानन्द जी की अद्भुत जीवन यात्रा का शाम के लगभग चार बजे अवसान हो गया। श्रद्धानन्द जैसे महापुरुष अपना सर्वस्व स्वाहा करने वाले त्यागी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना शरीर तो मानव-कल्याण एवं देश-हित में बलिदान किया ही मगर उससे पूर्व उन्होंने अपनी समस्त धन-सम्पदा अपने मिशन के लिए समर्पित कर दी थी। स्वामी जी महाराज एक ऐसे अद्भुत एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे कि उनके स्मरण मात्र से ही हमारे भीतर ओस्जविता, कर्मठता और बलिदान भावनाओं का संचार होने लगता है।

जीवन संघर्षों में सर्वदा मुखर श्रद्धानन्द है,
शौर्य और वीरता में प्रखर श्रद्धानन्द है।
निराशा की काली घटाओं को मात देता-
शून्य से शिखर तक का सफर श्रद्धानन्द है॥

■■

अत्यन्त गुणकारी और लाभदायक-मूली - मूली और इसके पत्ते भोजन को ठीक प्रकार से पचाने में सहायता करते हैं। मूली शरीर से विषैली गैस (कार्बनडाई आक्साइड) को निकाल कर जीवनदायी आक्सीजन प्रदान करती है मूली हमारे दांतों को मजबूत करती है तथा हड्डियों को शक्ति प्रदान करती है।

मूली के पत्तों के चार तोले रस में तीन माशा अजमोद का चूर्ण और चार रत्ती जोरवार मिलाकर दिन में दो बार नियमित एक सप्ताह तक लेने पर गुर्दे की पथरी गल जाती है।

एक कप मूली के रस में एक चम्मच अदरक का और एक चम्मच नींबू का रस मिलाकर नियमित सेवन करने से भूख बढ़ती है तथा पेट सम्बन्धी सभी रोग नष्ट होते हैं।

मूली के रस में समान मात्रा में अनार का रस मिलाकर पीने से रक्त में हीमोग्लोबिन बढ़ता है और रक्ताल्पता का रोग दूर हो जाता है। सूखी मूली को काढ़ा बनाकर उसमें जीरा और नमक डालकर पीने से खांसी और दमा में राहत मिलती है।

बवासीर की तो यह उत्तम औषधि है। इससे मूत्र विकार नष्ट होता है। इसे भोजन के साथ ही खाना अच्छा है। बड़ी मूली के बजाय छोटी मूली ही औषधिदृष्टयता अधिक उपयोगी है।

अनेक प्रकार के उदर के रोग और उसके कष्टों से यदि छुटकारा पाना चाहते हैं तो चटपटे, जायकेदार, आकर्षक मूली युक्त सलाद को अपनाइये।

साभार : वैदिक सार्वदेशिक-डॉ. मधुर शास्त्री

दिसम्बर 2023 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
03	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	भाग्य और पुरुषार्थ का जीवन पर प्रभाव
10	डॉ. विनय विद्यालंकार (7906725688)	'पश्य देवस्य काव्यम्, न ममार न जीर्यति' (अथर्ववेद 10.8.32) (विश्व को ईश्वर की दृष्टि से देखें, यह अमर है)
श्री राजीव चौधरी जी की स्मृति में एक संगोष्ठी का कार्यक्रम सायं 3:45 से 6:45 बजे तक		
17	आचार्य वीरेन्द्र कुमार शास्त्री (9810507498)	क्या जीवन एक संघर्ष है?
24	श्री विनय आर्य, महामंत्री, दि.आ.प्र.स.	स्वामी श्रद्धानन्द - एक ऐतिहासिक क्रांतिकारी
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस - कार्यक्रम (प्रातः 10 से 12:15 बजे तक) बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र के सभागार में होगा।		
31	आचार्य अमृता (8377086028)	भजन

नवम्बर 2023 से प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
M/s मुंजाल शोवा लिमिटेड श्री योगेश मुंजाल	21,000	श्री एस.सी. गर्ग	10,000	श्री अमर सिंह पहल	5,000
श्रीमती रेनू चौधरी	21,000	श्री पुनीत खुराना व श्रीमती सुमित्रा खुराना	10,000	श्री एस.एस. ढींगरा	4,500
श्रीमती निशा जावा	21,000	श्री सतीश चन्द्र सक्सेना	10,000	श्रीमती सरोज अब्रोल	1,500
श्री सुनील कुमार बहल	20,000	श्री विजय कपूर	5,100	श्रीमती सुनीता भुटानी	1,500
श्री अरुण कुमार बहल	20,000	श्रीमती इंदु वाधवा	5,100	श्री एस.के. वर्मा एवं परिवार	1,100
श्री रमन कुमार मेहता	20,000	श्रीमती अचला सिंह	5,000	श्री मनीष आर्य	1,100
श्री प्रताप गुलियानी	12,680	श्रीमती सुदेश चोपड़ा	5,000	श्री गिरीश अरोड़ा	1,100
श्री राजेंद्र कुमार वर्मा	10,000	श्री विजय कुमार भाटिया	5,000	श्रीमती श्वेता राठी	1,100
श्रीमती वनिता कपूर	10,000	श्री अशोक चोपड़ा	5,000		

मेडिकल सेन्टर में प्राप्त दान राशि :

श्री विजय मेहता ₹ 1,000/-

नेत्र ऑपरेशन के लिए प्राप्त दान राशि:

श्री दीपांकर कश्यप ₹ 5,100/-
श्री राज हाण्डा ₹ 5,000/-
श्रीमती सुनीता कपूर ₹ 25,000/-

विशेष अपील

आर्य समाज द्वारका के भवन निर्माण के लिए सब महानुभावों से निवेदन है कि वे यथा शक्ति अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करें।

ओ३म्

Regn. No. 3594/1968

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग, बी 31/सी कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-110048

फोन : 46678389, 9310140742 • ईमेल : samajarya@yahoo.in • वेबसाइट : aryasamajgk1.in

An ISO 9001:2015 Certified Institution

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

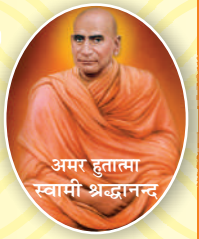

दिनांक : 24 दिसम्बर 2023, रविवार

प्रातः 9:00 बजे से दोपहर 12:15 बजे तक

इस शुभ अवसर पर आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है। आप कार्यक्रम में सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सम्मिलित होकर समारोह की शोभा बढ़ाएं।

कार्यक्रम

सन्ध्या - हवन	:	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम-धर्माचार्य	प्रात: 9:00 से 10:00 बजे तक (यज्ञशाला में)
जलपान एवं प्रसाद	:	प्रात: 10:00 बजे से 10:15 बजे तक	

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

प्रातः 10:15 बजे से दोपहर 12:15 बजे तक

(बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र सभागार में)

मुख्य अतिथि	:	**श्रीमती मिनाक्षी लेखी**, राज्यमंत्री, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार	
भजन	:	**श्री अंकित उपाध्याय**	प्रात: 10:15 से 11:00 बजे तक
प्रस्तुति	:	**अमृत पॉल आर्य शिशु शाला के बच्चों द्वारा**	प्रात: 11:00 से 11:15 बजे तक
संबोधन	:	**श्री विजय लखनपाल**, प्रधान	प्रात: 11:15 से 11:20 बजे तक
विषय	:	**स्वामी जी का प्रारंभ का जीवन**	
संबोधन	:	**श्री विनय आर्य**, महामंत्री, दि.आ.प्र.नि.स.	प्रात: 11:20 से दोपहर 12:05 बजे तक
विषय	:	**स्वामी श्रद्धानन्द-एक ऐतिहासिक क्रांतिकारी**	
मुख्य अतिथि संबोधन	:	**श्रीमती मिनाक्षी लेखी**	दोपहर 12:05 से 12:15 बजे तक
मंच संचालन	:	**श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा**-मन्त्री	
ऋषि लंगर	:	दोपहर 12:15 बजे	

निवेदक

संरक्षक	प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
योगेश मुंजाल रेणू मुंजाल	विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	अरुण बहल

आर्य समाज महिला सत्संग

उषा मरवाह (प्रधाना) | रेनु चौधरी (मंत्राणी) | सुधा गर्ग (कोषाध्यक्ष)

अंतरंग सभा सदस्य

श्रीमती अमृत पॉल, राजीव भटनागर, सतीश चन्द्र सक्सेना, नरेन्द्र वाधवा, श्रीमती सरोज अबरोल, अमर सिंह पहल, महेश आर्य, आर.के. तनेजा, डॉ. सुनील अबरोल, रमन मेहता, अशोक चोपड़ा, कर्नल गोपाल वर्मा, एस.सी. गर्ग, संजीव खुराना, विजय भाटिया, विनोद कुमार चोपड़ा, श्रीमती सुदेश चोपड़ा, श्रीमती अमला ठुकराल, श्रीमती वनिता कपूर